डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल और उनका 'कर्फ्यू' नाटक

डॉ. अमृता सिंह

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल का नाट्य-लेखन उस समय आरम्भ हुआ जब सामान्य जन मोह-भंग की स्थिति में था तथा मानव मूल्यों का ह्रास हो रहा था | समय के साथ-साथ उनका नाटककार व्यक्तित्व उनके नाटकों में विकसित होता गया | समकालीन जीवन की परतें खोलते उनके नाटक जीवन तथा सामाजिक समस्याओं और उनके मूल कारणों को प्रस्तुत करते हैं | उनके नाटकों में परम्परा, परिवेश, सामाजिक और वैयक्तिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण मिलता है | उन्होंने अपने अनेक नाटकों में जीवन की समस्याओं वरन जीवन के बदलते मूल्यों, अनास्था, अविश्वास, बढ़ते अपराध भाव, नए विचारों के कारण पुराने मूल्यों व सोच में आए परिवर्तन तथा विघटन से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं को उभारा है | डॉ. लाल के नाटक एक ओर ग्रामीण चरित्रों की व्यथा के माध्यम से ग्रामीण जीवन से जुड़े हैं, तो दूसरी और फैशन, सभ्यता और महानगर की विसंगतियों के धरातल पर नए जीवन मूल्यों की खोज में नगरी जीवन से बंधे हुए हैं | इनके अधिकांश नाटक और उनके पात्र अतीत की आधारभूमि पर खड़े हैं |

डॉ. लाल ने अनेक नाटकों के माध्यम से समाज और जीवन की समस्याओं तथा उनके मूल कारणों को विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से प्रस्तुत किया है | 'अँधा कुआँ' नामक नाटक ग्रामीण जीवन की विभिन्न विसंगतियों पर आधारित है | 'रातरानी', 'मादा कैक्टस', 'मिस्टर अभिमन्यु', जैसे नाटकों में परिवर्तित होते मूल्यों और विचारों, दो पीढ़ियों के मध्य टकराव, वैवाहिक आडम्बर, अविश्वास, मानसिक तनाव आदि स्थितियों को उभारा गया है | उन्होंने पौराणिक कथाओं को आधुनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास किया है अर्थात् उनके नाटकों में आधुनिक युग के पात्र और पौराणिक कथा के चरित्र अनुभूति के स्तर पर एक हो गए हैं | उन्होंने मिथक का प्रयोग अपने समय की प्रवृति और अपने समय के बोध को व्यंजित करने के लिए किया | आधुनिक जीवन के सन्दर्भ के अनुरूप मिथ प्रयुक्त नाटकों को अधिक सफ़लता मिली है | 'गुरु', 'एक सत्य हरिश्चंद्र', 'नरसिंह कथा', 'कलंकी', 'राम की लड़ाई', 'सूर्यमुख', 'मिस्टर अभिमन्यु', 'बलराम की तीर्थयात्रा' और 'यक्ष प्रश्न' इनके उल्लेखनीय मिथकाश्रित नाटक हैं | इस

प्रकार की रचनाओं में आधुनिक चेतना की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त दो धरातलों पर अर्थ की क्षमता भी विद्यमान रहती है |

राजनीतिक एवं सामाजिक स्तर पर उन्होंने अपने नाटकों में व्यक्ति की वेदना को अभिव्यक्त किया है | राजनीति में धर्म, जाति, निर्धनता तथा साम्प्रदायिकता के नाम पर हिंसा, मार-काट, भ्रष्टाचार आदि के आक्रोश को उन्होंने 'रक्तकमल', 'सूखा सरोवर', 'कलंकी', 'अब्दुल्ला दीवाना' आदि नाटकों में प्रस्तुत किया है | स्त्री-पुरुष संबंध, दाम्पत्य जीवन के विभिन्न रूप, यौन कुंठाएं आदि का वर्णन उन्होंने 'दर्पण', 'अँधा कुआँ', 'रातरानी', 'मादा कैक्टस', 'सूर्यमुख', 'व्यक्तिगत' आदि नाटकों में किया है | डॉ. लाल के नाटकों को मुख्यतः दो धाराओं - समसामयिक चिंताओं की अभिव्यक्ति तथा स्त्री-पुरुष संबंधों का अन्वेषण में विभाजित किया जा सकता है | उन्होंने नारी की भावनाओं को बहुत गहराई से प्रस्तुत करते हुए, नारी पात्रों का अत्यंत प्रभावपूर्ण रूप दर्शाया है | वह नारी को घर की चारदीवारी में बंद रहकर जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा उसे पुरुष के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने की प्रेरणा देते हैं | उन्होंने विशेष रूप से समाज में स्त्री की स्थिति का वर्णन करते हुए, समय के साथ-साथ नारी में आए परिवर्तन को भी परिलक्षित किया है | अत: कहा जा सकता है कि स्त्री-पुरुष संबंध को एक नया मौलिक नीति विधान प्रदान करने में डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल पीछे नहीं रहे |

लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक स्थितियों का समग्रता के साथ चित्रण करते हुए यह दर्शाते हैं कि विभिन्न व्यवस्थाओं के नाम पर जीवन की स्वाभाविकता को नष्ट कर औपचारिकताओं के बंधन में बंधकर व्यक्ति के जीवन की स्वाभाविक गति अवरुद्ध हो जाती है | जीवन से विलुप्त होती जा रही सहजता, निष्ठा, स्वाभाविकता का कारण है जीवन की वर्जनाओं का पर्याय बन जाना | डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा रचित 'कर्फ्यू' नाटक जीवन की इन्हीं वर्जनाओं की विवशता का प्रतीक है | सन 1972 में रचित 'कर्फ्यू' नाटक में नाटककार ने प्रतीकात्मक रूप में इन्हीं वर्जनाओं को बाहर के कर्फ्यू से जोड़ा है | इसमें मानव मन के उन संस्कारों को उभारा गया है जो कर्फ्यू के रूप में मानव को घेरे हुए हैं | वर्तमान समय में सामाजीक संबंध, रिश्ते, मर्यादाओं का शिकार यह समाज पूर्णत: कर्फ्यूग्रस्त है | सामाजिक सीमाओं के कारण मानव की इच्छाएँ दमित होती हैं जो व्यक्ति को अपने वास्तविक रूप से पूर्णत: परिचित नहीं होने देते | मनुष्य आज जो

कर्फ्यू अपने अंदर पाता है, वही इस समाज में व्यापक रूप में चारों ओर लगा हुआ है, जिसे लेखक ने अपने नाटक में तोड़ने का प्रयास किया है |

प्रस्तुत नाटक प्रत्यक्ष और परोक्ष व्यक्तित्व की आँख-मिचौली के रूप में अभिव्यक्ति पाता है | नाटक में चार मुख्य पात्र- मनीषा, गौतम, संजय और कविता हैं , कुछ अन्य लोगों के नाम केवल सच्च रूप में आते हैं | इस नाटक को केवल पांच दृश्यों में लिखा गया है, जिसमें पर-स्त्री और पर-पुरुष के सम्पर्क में आने से मानव-मन में छिपे व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास किया गया है | प्रेम व विश्वास दाम्पत्य जीवन का आधार है, किन्तु कई बार पति-पत्नी एक-दूसरे के विषय में थोड़ा-सा जानकर, उसी थोड़ी-सी पहचान में अपना जीवन व्यतीत करने लगते हैं | उनके व्यक्तित्व में न जाने कितने अनदेखे ऐसे पक्ष रह जाते हैं जिसके कारण दाम्पत्य जीवन ढोंग तथा दिखावेपन का शिकार बनकर रह जाता है | अपने इसी अप्रकट व्यक्तित्व को उचित-अनुचित अवसर या स्थिति पाकर प्रकट करने पर वह आश्चर्यचकित हो जाते हैं और कुछ ऐसे ही अनुभव से आलोच्य नाटक के पात्रों का आमना-सामना होता है |

मानवीय भावनाओं के दर्पण आलोच्य नाटक कर्फ्यू में एक ऐसे शहर का चित्रण किया गया है जहाँ दंगों के पश्चात् पूरे शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया है | लेखक के अनुसार "यह 'रायट' और 'कर्फ्यू' का एक तरह से हमारे जीवन के भीतर रायट और कर्फ्यू का ही प्रतिफलन, बल्कि उसी का 'प्रोजेक्शन' है, 'एक्सटेंशन' है : हम यों भी कह सकते हैं कि चूँकि हमारा व्यक्तिगत जीवन बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक कर्फ्यू में, हद में, पाबंदी में, वर्जनाओं में घिरकर जिया जाता है, इसी नाते हम अपनी जीवन-शक्ति को अभिव्यक्त करने के लिए समाज में, घर में, पास-पड़ोस में सहसा अपराध कर बैठते हैं, रायट करते हैं और इस तरह से अपने भीतर लगे कर्फ्यू को तोड़ना चाहते हैं |"[1] लेखक का आश्य है कि हमारा जीवन सीमाओं में कैद रहता है, जिसके कारण आए दिन समाज में कई अपराध होते रहते हैं और हम अस्वाभाविक, अमानवीय होकर अपने सहज मानवीय संबंधों को प्रकट करने के लिए विवश हो जाते हैं |

नाटक के पात्र उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो जीवन के सरल प्रवाह और औपचारिकताओं को तोड़कर अपने मन की अतृप्त भावनाओं को उजागर करते हैं | गौतम एक सम्पन्न युवा पति है जो एक टेक्सटाइल मिल का मैनेजिंग डायरेक्टर है, जिसका जीवन किन्हीं परोक्ष-अपरोक्ष सीमाओं, नियमों, शर्तों में बंधकर व्यतीत हो रहा है | कर्फ्यू की रात मनीषा जब उसके घर रात भर के

लिए आश्रय लेती है तो उसके भीतर एक ऐसे पुरुष को देखती है जो कोई स्वाभाविक काम करने के लिए तैयार नहीं है, किन्तु अपने पूर्व-व्यकित्त्व का परित्याग कर व्यभिचार की ओर उन्मुख हो उसकी अस्मिता को भंग करने का प्रयास करता है | गौतम के माध्यम से लेखक ने उच्च वर्ग के लोगों की दुर्बलता के अतिरिक्त पूरब और पश्चिम की सभ्यता का समन्वय भी किया है | आधुनिक विचारों वाली स्त्री मनीषा उच्चवर्गीय समाज में अपना स्थान बनाने की लालसा तथा प्यार की तलाश में समस्त सामाजिक वर्जनाओं से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करती है | अपनी इसी आधुनिकता का परिचय देते हुए वह कहती है "क्यों इतना डरता है आदमी एक-दूरसे से ? क्यों हर समय उसे एक ऐसे खोल की ज़रूरत रहती है अपने को ढांकने के लिए जो सिर्फ दिखने में मज़बूत लगता है ? क्यों नहीं वो अपना 'इन्हीबिश्न्स' तोड़कर बाहर आ जाता है ? कारण क्या हमारी सड़ी-गली सामाजिक व्यवस्था नहीं ?"[2] वह सामाजिक सत्य को स्वीकारते हुए स्वयं पर स्वतंत्रता के नाम पर लगाए हुए कर्फ्यू को अनुभूत करते हुए उसे तोड़ना चाहती है | मनीषा अबाध यौन स्वातंत्र्य की पक्षधर है, इसलिए गौतम को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हुए कहती है "मेरी टांग कैसी है ? कहिए न ! कहिए लाजवाब संगमरमर की प्रतिमा ... खजुराहो की नर्तकी |"[3] किन्तु शराब के नशे में गौतम द्वारा उसके साथ किया गया दुर्व्यवहार तथा व्यभिचार उसके विश्वास को और दृढ़ कर देता है| अपने असहज और आकस्मिक आचरण पर गौतम के पश्चाताप पर वह (मनीषा) कहती है "तुमने ऐसा पहले कभी नहीं किया था, आज किया... यानी जिस तरह का जीवन तुम जी रहे हो उससे तुम भागना चाहते हो |"[4] अपनी थोथी स्वतंत्रता पर पश्चाताप करते हुए, मनीषा को यह अनुभव होता है कि आत्मशक्ति और आत्म निरीक्षण के बल पर ही वर्जनाओं से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है |

कविता, गौतम की पत्नी औपचारिकताओं में बंधी हुई नारी है, परन्तु कर्फ्यू की रात जब वह संजय के घर आश्रय लेती है तो संजय के संग नाटक का पूर्वाभ्यास करते हुए उसका अपने प्रेमी के प्रति (जिसे वह पहले ही छोड़ चुकी थी) प्रेम उमड़ आता है और संजय के बहाने वही समर्पण अभिव्यक्ति पाता है | भावावेश में आकर वह स्वयं को उसके समक्ष समर्पित तो करती है किन्तु यह अहसास होने पर कि वह जिसे सुख का सार मान रही है, उसकी नींव बालू की ढेर पर है वह पुन: अपने बंधे-बंधाए घेरे में लौट आती है | कलाकार संजय अपने लेखकीय जीवन के अहंकार के कारण पत्नी का परित्याग कर देता है,

किन्तु कर्फ्यू की रात कविता के सम्पर्क में आने के बाद पहली बार उसके व्यक्तित्व को चुनौती मिलती है जिसके कारण वह अपने व्यकित्त्व पर लगे कर्फ्यू को तोड़ना चाहता है |

अंत में चारों चरित्र अपने भीतर के कर्फ्यू को तोड़कर एक नए जीवन सन्दर्भ से जुड़ते हैं | एक ओर कविता जीवन के नए अनुभव से गुज़रते हुए जिस प्रकार अपने चरित्र के अज्ञात पक्ष को स्वीकार करती है, उसी प्रकार अपने पति की भी स्वीकारती है | वहीं गौतम पत्नी द्वारा कल्पित कथा सुनने के पश्चात् भी परिस्थिति को सामान्य भाव से स्वीकार करता है क्योंकि नाटकीय परिणति के अनुसार उसकी कल्पना वही घटा हुआ यथार्थ सिद्ध होने लगता है जो उस घर में गौतम और मनीषा के बीच घट चुका था | यह घटना उनके दाम्पत्य जीवन को एक नई भूमिका प्रदान करती है, जिसके कारण वह विवाह के कई वर्षों पश्चात् पहली बार विवाह की वर्षगांठ मनाते हैं | अंततः गौतम और कविता एक-दूसरे को नए रूप में पाते हैं, जो उनके वास्तविक दाम्पत्य जीवन की नई नींव है | इसी प्रकार संजय भी पहली बार स्वयं को कविता के माध्यम से जान पाता है | उसका यह कथन "जीवन के पन्द्रह वर्ष मैंने इसी में लगा दिए | कुछ मिलता है या नहीं, यह तो सोचे-समझे बिने मैं लगा रहा, चिपका रहा हूँ नाटक की इस दुनिया से | मैंने इसी में दुनिया को देखा है, जीवन को जाना है, मृत्यु को समझा है | इससे हटकर जीवन की कल्पना मैंने की ही नहीं |"... "मैं कभी जीवन से उस तौर पर जुड़ नहीं पाया | मैंने नाटकों के साधारण-से जीवन को जाना-समझा, जीवन के माध्यम से नाटकों को नहीं |"[5] इस ओर संकेत करता है | वहीं कर्फ्यू हटने के पश्चात् कविता और मनीषा की भेंट होने पर मनीषा की कविता के समक्ष स्वीकृति "मैं स्वतंत्र हूँ, यही है मेरा भय, कि मेरी स्वतंत्रता कोई छीन न ले | आज मैंने पहली बार देखा...हाँ देखा, पहली बार देखा - मेरी स्वतंत्रता केवल फैशन है | इसमें कोई दम नहीं | इसे मैंने अर्जित नहीं किया | मैं अपनी बाहरी स्वतंत्रता को अपनी मुक्ति मानती थी |इसलिए मैं स्वतंत्र बनती थी, खेल करती थी, स्वतंत्र होती नहीं थी|"[6] यह दर्शाती है कि किस प्रकार परिस्थिति के चलते मनीषा अपने आधुनिक होने के भ्रम से बाहर निकलकर स्वयं से साक्षात्कार करती है |

नाटक का प्रत्येक पात्र कर्फ्यू की रात में 'रायट' के तौर पर कुछ ऐसा करता है जो उसने अपने जीवन में पहले कभी नहीं किया | जैसे गौतम का एक स्त्री की अस्मिता को भंग करने की चेष्टा करना, कविता का संजय के समक्ष आत्म समर्पण करना, मनीषा का उसके प्रति गौतम के अभद्र व्यवहार को नज़रअंदाज कर पुन: उसके पास लौटकर आना तथा अहंकारी संजय का कविता के समक्ष अपने

हथियार डाल देना | यह सभी घटनाएँ इस बात का आभास करवाती हैं कि जिस प्रकार का जीवन व्यक्ति व्यतीत कर रहा है वह उससे संतुष्ट नहीं, इसलिए जाने-अनजाने परिवर्तन की इच्छा में वह ग़लत रास्ते पर चल पड़ता है या भटक जाता है, जैसा की आलोच्य नाटक के पात्रों के साथ होता है | वास्तव में जिस प्रकार स्वयं को जाने बिना जीवन की दिशा व अनुकूल राह का सही चयन कर पाना संभव नहीं होता, उसी प्रकार दूसरों का परिचय पाना भी संभव नहीं|

लेखक का मानना है कि "शायद जीवन में ऐसा नहीं होता, लेकिन मेरा विश्वास है जीवन में ऐसा क्यों न हो, और यही इस नाटक की विशेष रचना है | आज जीवन में जिस बुनियादी परिवर्तन की ज़रूरत है, मैंने यह इशारा इसी रचना-भूमि से करने की कोशिश की है | इस परिवर्तन की शुरुआत तब होती है जब व्यक्ति अपने पर लगे हुए कर्फ्यू को तोड़कर अपने को एक नये रूप में तलाशने का प्रयत्न करता है |"[7]

डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल ने सभी पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को प्याज़ की परत के समान सफ़लता से खोला है | इसका सशक्त उदाहरण है कविता जो संजय के नाटक की नायिका की ही प्रतिकृति है | कविता उस युवती की भूमिका करती हुई उस चरित्र में इस प्रकार डूब जाती है कि संजय भी उससे कहता है "जो अभिनेत्री मेरे संग युवती की भूमिका कर रही है, आज करीब एक महीना हो गया रिहर्सल करते, उसमें वह बात अब तक पैदा नहीं हुई जो आप में एकाएक ...मुझे लगता है, अपनी ज़िन्दगी में पहली बार..."[8] कविता युवती के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर स्वयं को तृप्त करना चाहती है | इसी प्रकार मनीषा का अपने पूर्व सम्बन्धों का ब्यौरा देते हुए कहना "अकेला पाकर उसने मुझे 'किस' कर लिया मुझे बुरा नहीं लगा था पर फिर भी मैंने उसे डांट दिया |"[9] जैसी प्रासंगिक कथाएँ उनके चरित्रांकन में सहायक हुई हैं | नाटककार ने इन चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करने के लिए सीधी और सटीक भाषा का प्रयोग किया है | सरल व संक्षिप्त संवादों के अतिरिक्त उन्होंने उर्दू तथा अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग कर नाटक को सजीवता प्रदान की है | इसके अतिरिक्त अधूरे संवादों का प्रयोग पात्रों के मानसिक कर्फ्यू तथा उनके जीवन की औपचारिकताओं को प्रस्तुत करता है जैसे मनीषा का गौतम से कहना "बैठ जाऊं या..."[10] या संजय का कहना "जानता हूँ - हर लड़की की तरह तुम भी ...|"[11]

डॉ.लाल ने आलोच्य नाटक में देशकाल और वातावरण पर विशेष ध्यान नहीं दिया है, पर राजनीतिक दलों का आपसी मतभेद के कारण दंगा-फसाद करवाना तथा पुलिस द्वारा मनीषा पर अत्याचार किया जाना स्वत: ही पाठक को परिस्थितियों से अवगत करा देता है |

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि नाटककार ने समकालीन जीवन की परतों को बखूबी खोला है | जीवन से संबंधित कई समस्याओं तथा उनके मूल कारणों तक न पहुँचते हुए भी विभिन्न प्रश्नों द्वारा इन्हें उजागर करने का प्रयास किया है | 'कर्फ्यू' नाटक का उद्देश्य मानव-जीवन का यथार्थ उसके सामने रखना है | इस नाटक के सभी पात्र एक बंधी-बंधाई सीमा के पिंजरे में जकड़े हुए थे, किन्तु एक-दूसरे के सम्पर्क में आकर वे इस पिंजरे से मुक्त होकर पहली बार अपने अस्तित्व से परिचित होते हैं और उनके मन तथा व्यक्तित्व पर लगा 'कर्फ्यू' टूट जाता है | अत: जीवन को अर्थपूर्ण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम खोखले सिद्धांतों और आदर्शों में परिवर्तन लाएं| अपनी नाट्य साधना के चलते डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल हिन्दी नाट्य-साहित्य में उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित हैं | अपनी इसी विशिष्ट प्रतिभा के कारण वे सदा स्मरण रहेंगे |

सन्दर्भ सूची :

1. लाल, लक्ष्मीनारायण लाल. *कर्फ्यू*, पृ. 9-10
2. वही, पृ. 29
3. वही, पृ. 25
4. वही, पृ. 84
5. वही, पृ. 92-93
6. वही, पृ. 116-117
7. वही, पृ. 11
8. वही, पृ. 59
9. वही, पृ. 34
10. वही, पृ. 18
11. वही, पृ. 34